Thank you so much... मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

15-09-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मीठे बच्चे - बाप आये हैं तुम्हें कर्म-अकर्म-विकर्म की गुह्य गति सुनाने, जब आत्मा और शरीर दोनों पवित्र हैं तो कर्म अकर्म होते हैं, पतित होने से विकर्म होते हैं।

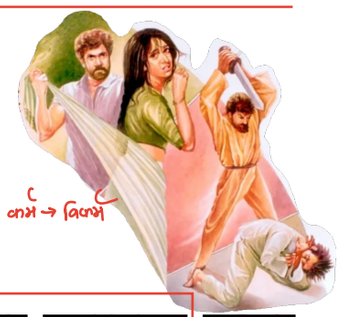

प्रश्नः- आत्मा पर कट (जंक) चढ़ने का कारण क्या है? कट चढ़ी हुई है तो उसकी निशानी क्या होगी?

उत्तरः- कट चढ़ने का कारण है - विकार। पतित बनने से ही कट चढ़ती है। अगर अभी तक कट चढ़ी हुई है तो उन्हें (1) पुरानी दुनिया की कशिश होती रहेगी। (2) बुद्धि क्रिमिनल तरफ जाती रहेगी। (3) याद में रह नहीं सकेंगे।

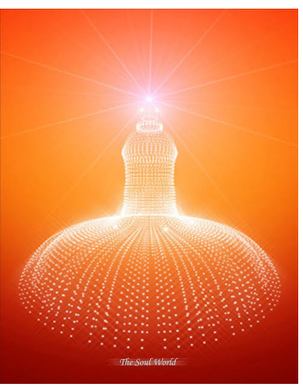

ओम् शान्ति। बच्चे इसका अर्थ तो समझ गये हैं। ओम् शान्ति कहने से ही यह निश्चय हो जाता है कि हम आत्मायें यहाँ की रहवासी नहीं हैं। हम तो शान्तिधाम की रहवासी हैं। हमारा स्वधर्म शान्त है, जब घर में रहते हैं फिर यहाँ आकर पार्ट बजाते हैं, क्योंकि शरीर के साथ कर्म करना पड़ता है। कर्म

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Last time this murli was revised on 1/09/2020

होता है एक अच्छा, दूसरा बुरा। कर्म बुरा होता है रावण राज्य में। रावण राज्य में सबके कर्म विकर्म बन गये हैं। एक भी मनुष्य नहीं जिससे विकर्म न होता हो। मनुष्य तो समझते हैं साधू-सन्यासी आदि से विकर्म नहीं हो सकता क्योंकि वह पवित्र रहते हैं। सन्यास किया हुआ है। वास्तव में पवित्र किसको कहा जाता है, यह बिल्कुल नहीं जानते। कहते भी हैं हम पतित हैं। पतित-पावन को बुलाते हैं। जब तक वह न आये तब तक दुनिया पावन बन नहीं सकती। यहाँ यह पतित पुरानी दुनिया है, इसलिए पावन दुनिया को याद करते हैं। पावन दुनिया में जब जायेंगे तो पतित दुनिया को याद नहीं करेंगे। वह दुनिया ही अलग है। हर एक चीज़ नई फिर पुरानी होती है ना। नई दुनिया में एक भी पतित हो न सके। नई दुनिया का रचयिता है परमपिता परमात्मा, वही पतित-पावन है, उनकी रचना भी जरूर पावन होनी चाहिए। पतित सो पावन, पावन सो पतित, यह बातें दुनिया में किसकी बुद्धि में बैठ न सकें। कल्प-कल्प बाप ही आकर समझाते हैं। तुम बच्चों में भी कई

important to understand

without Shivbaba, the world may become zombie world

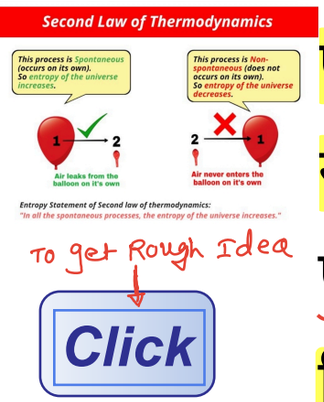

To get Rough Idea

Click

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

But we know, How Lucky & Great we are..!

निश्चयबुद्धि होकर फिर संशय बुद्धि हो जाते हैं। माया एकदम हप कर लेती है। तुम महारथी हो ना। महारथियों को ही भाषण पर बुलाते हैं। महाराजाओं को भी समझाना है। तुम ही पहले पावन पूज्य थे, अभी तो यह है ही पतित दुनिया। पावन दुनिया में भारतवासी ही थे। तुम भारतवासी आदि सनातन देवी-देवता धर्म के डबल सिरताज सम्पूर्ण निर्विकारी थे। महारथियों को तो ऐसे समझाना होगा ना। इस नशे से समझाना होता है। भगवानुवाच - काम चिता पर बैठ सांवरे बन जाते हैं फिर ज्ञान चिता पर बैठने से गोरा बनेंगे। अब जो भी समझाते हैं वह तो काम चिता पर बैठ न सकें। परन्तु ऐसे भी हैं जो औरों को समझाते-समझाते काम चिता पर बैठ जाते हैं। आज यह समझाते कल विकार में गिर पड़ते। माया बड़ी जबरदस्त है। बात मत पूछो। औरों को समझाने वाले खुद काम चिता पर बैठ जाते हैं। फिर पछताते हैं - यह क्या हुआ? बॉक्सिंग है ना। स्त्री को देखा और कशिश आई, काला मुँह कर दिया। माया बड़ी दुश्तर है। प्रतिज्ञा कर और फिर गिरते हैं तो कितना सौ गुणा

V/S

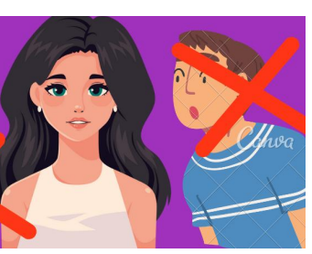

दण्ड पड़ जाता है। वह तो जैसे शूद्र समान पतित हो गया। गाया भी हुआ है - अमृत पीकर फिर बाहर में जाए दूसरों को सताते थे। गंद करते थे। ताली दो हाथ से बजती है। एक से तो बज न सके। दोनों खराब हो जाते। फिर कोई तो समाचार देते हैं, कोई फिर लज्जा के मारे समाचार ही नहीं देते। समझते हैं कहाँ ब्राह्मण कुल में नाम बदनाम न हो जाए। युद्ध में कोई हारते हैं तो हाहाकार हो जाता है। अरे इतने बड़े पहलवान को भी गिरा दिया! ऐसे बहुत एक्सीडेंट होते हैं। माया थप्पड़ मारती है, बहुत बड़ी मंजिल है ना।

One hand cant claps, it takes two hands to clap.

अब तुम बच्चे समझाते हो जो सतोप्रधान गोरे थे, वही काम चिता पर बैठने से काले तमोप्रधान बने हैं। राम को भी काला बनाते हैं। चित्र तो बहुतों के काले बनाते हैं। परन्तु मुख्य की बात समझाई जाती है। यहाँ भी रामचन्द्र का काला चित्र है, उनसे पूछना चाहिए - काला क्यों बनाया है? कह

देंगे यह तो ईश्वर की भावी। यह तो चलता आता है। "क्यों होता, क्या होता" - यह कुछ नहीं जानते।

अब तुमको बाप समझाते हैं काम चिता पर बैठने से पतित दु:खी वर्थ नाट ए पेनी बन जाते हैं। वह है निर्विकारी दुनिया। यह है विकारी दुनिया। तो ऐसे-ऐसे समझाना चाहिए। यह सूर्यवंशी, यह चन्द्रवंशी फिर वैश्य वंशी बनना ही है। वाम मार्ग में आने से फिर वह देवता नहीं कहलाते। जगत नाथ के मन्दिर में ऊपर में देवताओं का कुल दिखाते हैं। ड्रेस देवताओं की है, एक्टिविटी बड़ी गन्दी दिखाते हैं।

Click

Understand वाम मार्ग Through UPSC Perspective

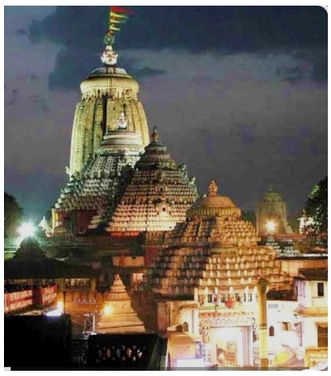

Also at Khajuraho Temple, M.P.

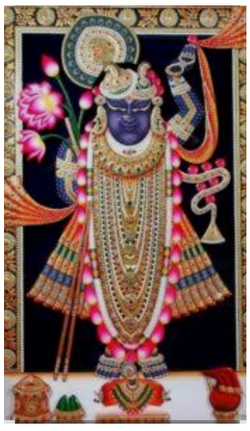

बाप जिन बातों पर अटेन्शन खिंचवाते हैं, ध्यान देना चाहिए। मन्दिरों में बहुत सर्विस हो सकती है। श्रीनाथ द्वारे में भी समझा सकते हैं। पूछना चाहिए इनको काला क्यों बनाया है? यह समझाना तो बहुत अच्छा है। वह है गोल्डन एज, यह है आइरन एज। कट चढ़ जाती है ना। अभी तुम्हारी कट उतर

रही है। जो याद ही नहीं करते तो कट भी नहीं उतरती। बहुत कट चढ़ी हुई होगी तो उसे पुरानी दुनिया की कशिश होती रहेगी। सबसे बड़ी कट चढ़ती ही है विकारों से। पतित भी उनसे बने हैं।

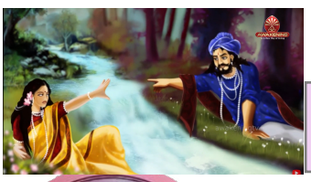

अपनी जांच करनी है - हमारी बुद्धि क्रिमिनल तरफ तो नहीं जाती। अच्छे-अच्छे फर्स्टक्लास बच्चे भी फेल हो पड़ते हैं। अभी तुम बच्चों को यह समझ मिली है। मुख्य बात है ही पवित्रता की। शुरू से लेकर इस पर ही झगड़े चलते आये हैं।

बाप ने ही यह युक्ति रची - सब कहते थे हम ज्ञान अमृत पीने जाते हैं। ज्ञान अमृत है ही ज्ञान सागर के पास। शास्त्र पढ़ने से तो कोई पतित से पावन बन नहीं सकते। पावन बन फिर पावन दुनिया में जाना है। यहाँ पावन बन फिर कहाँ जायेंगे? लोग समझते हैं फलाने ने मोक्ष को पाया। उनको क्या पता, अगर मोक्ष को पा लिया फिर तो उनका क्रियाकर्म आदि भी नहीं कर सकते। यहाँ ज्योत आदि जगाते हैं कि उनको कोई तकलीफ न हो। अंधियारे में ठोकरें न खायें। आत्मा तो एक शरीर छोड़ दूसरा जाकर लेती है, एक सेकण्ड की बात

है। अंधियारा फिर कहाँ से आया? यह रस्म चली आती है, तुम भी करते थे, अब कुछ नहीं करते हो। तुम जानते हो शरीर तो मिट्टी हो गया। वहाँ ऐसी रस्म-रिवाज होती नहीं। आजकल रिद्धि-सिद्धि की बातों में कुछ रखा नहीं है। समझो कोई को पंख आ जाते हैं, उड़ने लगते हैं - फिर क्या, उससे फायदा क्या मिलेगा? बाप तो कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। यह योग अग्नि है, जिससे पतित से पावन बनेंगे। नॉलेज से धन मिलता है। योग से एवर हेल्दी पवित्र, ज्ञान से एवर वेल्दी धनवान बनते हैं। योगी की आयु हमेशा बड़ी होती है। भोगी की कम। श्रीकृष्ण को योगेश्वर कहते हैं। ईश्वर की याद से कृष्ण बना है, उनको स्वर्ग में योगेश्वर नहीं कहेंगे। वह तो प्रिन्स है। पास्ट जन्म में ऐसा कर्म किया है, जिससे यह बना है। कर्म-अकर्म-विकर्म की गति भी बाप ने समझाई है। आधाकल्प है राम राज्य, आधाकल्प है रावण राज्य। विकार में जाना - यह है सबसे बड़ा पाप। सब भाई-बहन हैं ना। आत्मायें सब भाई-भाई हैं। भगवान की सन्तान होकर फिर क्रिमिनल एसाल्ट

For Example

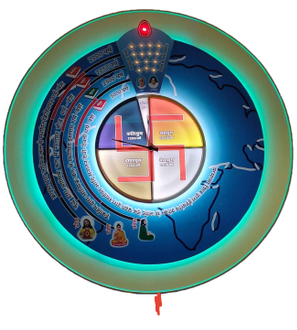

कैसे करते हैं। हम बी.के. विकार में जा नहीं सकते। इस युक्ति से ही पवित्र रह सकते हैं। तुम जानते हो अभी रावण राज्य खत्म होता है फिर हर एक आत्मा पवित्र बन जाती है। उसको कहा जाता है - घर-घर में सोझरा। तुम्हारी ज्योत जगी हुई है। ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। सतयुग में सब पवित्र ही रहते हैं। यह भी तुम अभी समझते हो। दूसरों को समझाने की बच्चों में नम्बरवार ताकत रहती है। नम्बरवार याद में रहते हैं। राजधानी कैसे स्थापन होती है, कोई की बुद्धि में यह नहीं होगा। तुम सेना हो ना। जानते हो याद के बल से पवित्र बन हम राजा रानी बन रहे हैं। फिर दूसरे जन्म में गोल्डन स्पून इन माउथ होगा। बड़ा इम्तहान पास करने वाले मर्तबा भी बड़ा पाते हैं। फ़र्क पड़ता है ना, जितनी पढ़ाई उतना सुख। यह तो भगवान पढ़ाते हैं। यह नशा चढ़ा हुआ रहना चाहिए। चोबचीनी (ताकत का माल) मिलता है। भगवान बिगर ऐसा भगवान-भगवती कौन बनायेंगे। तुम अभी पतित से पावन बन रहे हो फिर जन्म-जन्मान्तर के लिए सुखी बन जायेंगे। ऊंच पद

Exclusive Authority of Shiv baba

So, Be more cautious...!

पायेंगे। पढ़ते-पढ़ते फिर गन्दे बन जाते हैं। देह-अभिमान में आने से फिर ज्ञान का तीसरा नेत्र बन्द हो जाता है। माया बड़ी जबरदस्त है। बाप खुद कहते हैं बड़ी मेहनत है। मैं कितनी मेहनत करता हूँ - ब्रह्मा के तन में आकर। लेकिन समझकर फिर भी कह देते ऐसे थोड़ेही हो सकता है, शिवबाबा आकर पढ़ाते हैं - हम नहीं मानते। यह चालाकी है। ऐसे भी बोल देते हैं। राजाई तो स्थापन हो ही जायेगी। कहते हैं ना सच की बेड़ी हिलती है परन्तु डूबती नहीं। कितने विघ्न पड़ते हैं। अच्छा!

As Certain as Death

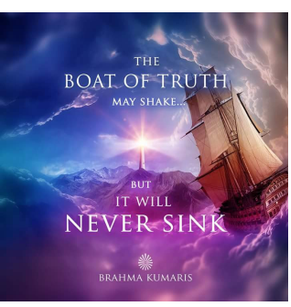

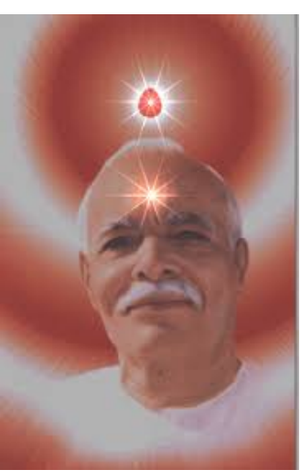

मीठे-मीठे सिकीलधे नूरे रत्न, श्याम से सुन्दर बनने वाली आत्माओं प्रति मात-पिता बापदादा का दिल व जान, सिक व प्रेम से याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) योग की अग्नि से विकारों की कट (जंक) को उतारना है। अपनी जांच करनी है कि हमारी बुद्धि क्रिमिनल तरफ तो नहीं जाती है?

2) निश्चयबुद्धि बनने के बाद फिर कभी किसी भी बात में संशय नहीं उठाना है। विकर्मों से बचने के लिए कोई भी कर्म अपने स्वधर्म में स्थित होकर बाप की याद में करना है।

Points: ज्ञान योग धारणा

Method/Process/Instrument

Outcome/Output/Result

15-09-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- श्रेष्ठ पालना की विधि द्वारा वृद्धि करने वाले सर्व की बधाईयों के पात्र भव

Finale Achievement

ये पक्का समझ लो..

संगमयुग बधाइयों से ही वृद्धि पाने का युग है।

बाप की, परिवार की बधाइयों से ही आप बच्चे पल रहे हो। बधाईयों से ही नाचते, गाते, पलते, उड़ते जा रहे हो। यह पालना भी वन्डरफुल है।

तो आप बच्चे भी बड़ी दिल से, रहम की भावना से, दाता बनकर हर घड़ी एक दो को बहुत अच्छा, बहुत अच्छा कह बधाईयां देते रहो - यही पालना की श्रेष्ठ विधि है।

इस विद्धि से सर्व की पालना करते रहो तो बंधाइयों के पात्र बन जायेंगे।

स्लोगन:- अपना सरल स्वभाव बना लेना - यही समाधान स्वरूप बनने की सहज विधि है।

15-09-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मातेश्वरी जी के अनमोल महावाक्य -

"पुरुषार्थ और प्रालब्ध का बना हुआ अनादि ड्रामा"

मातेश्वरी: पुरुषार्थ और प्रालब्ध दो चीज़ें हैं, पुरुषार्थ से प्रालब्ध बनती है। यह अनादि सृष्टि का चक्र फिरता रहता है, जो आदि सनातन भारतवासी पूज्य थे, वही फिर पुजारी बनें फिर वही पुजारी पुरुषार्थ कर पूज्य बनेंगे, यह उतरना और चढ़ना अनादि ड्रामा का खेल बना हुआ है।

जिज्ञासू: मातेश्वरी, मेरा भी यह प्रश्न उठता है कि जब यह ड्रामा ऐसा बना हुआ है तो फिर अगर ऊपर चढ़ना होगा तो आपेही चढ़ेंगे फिर पुरुषार्थ करने का फायदा ही क्या हुआ? जो चढ़ेंगे फिर भी गिरेंगे फिर इतना पुरुषार्थ ही क्यों करें? मातेश्वरी, आपका कहना है कि यह ड्रामा हूबहू रिपीट होता

Question:

Ditto
This question was once asked by a person who was new in Gyan..

This question Arises while We are at तमो/तमोगुण Stage Because We don't have the Capacity to understand the drama at thought/ Subtle level.

है तो क्या आलमाइटी परमात्मा सदा ऐसे खेल को देख खुद थकता नहीं है? जैसे 4 ऋतुओं में सर्दी, गर्मी आदि का फर्क रहता है तो क्या इस खेल में फर्क नहीं पड़ेगा?

Drama is Ever New

अलिफ लैला

हर शब नई कहानी
दिलचस्प है बयानी
सदियाँ गुज़र गयी है
लेकिन न हो पुरानी

बाबा कहते है कि ये ड्रामा नित्य नया है तो पुराने ते पुराना भी है।

Click

De ja Vu

Answer:

मातेश्वरी: बस, यही तो खूबी है इस ड्रामा की, हूबहू रिपीट होता है और इस ड्रामा में और भी खूबी है जो रिपीट होते हुए भी नित्य नया लगता है। पहले तो अपने को भी यह शिक्षा नहीं थी, लेकिन जब नॉलेज मिली है तो जो जो भी सेकेण्ड बाय सेकेण्ड चलता है, भल हूबहू कल्प पहले वाला चलता है परन्तु जब उनको साक्षी हो देखते हैं तो नित्य नया समझते हैं। अभी सुख दु:ख दोनों की पहचान मिल गयी इसलिए ऐसे नहीं समझना अगर फेल होना ही है तो फिर पढ़े ही क्यों? नहीं, फिर तो ऐसे भी समझें अगर खाना मिलना होगा तो आपेही मिलेगा, फिर इतनी मेहनत कर कमाते ही क्यों हो? वैसे हम भी देख रहे हैं अब चढ़ती कला का समय

Simple Logic

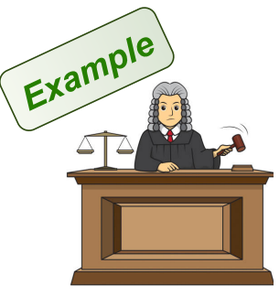

आया है, वही देवता घराना स्थापन हो रहा है तो क्यों न अभी ही वो सुख ले लेवें। जैसे देखो अब कोई जज बनना चाहता है तो जब पुरुषार्थ करेगा तब उस डिग्री को हांसिल करेगा ना। अगर उसमें फेल हो गया तो मेहनत ही बरबाद हो जाती है, परन्तु इस अविनाशी ज्ञान में फिर ऐसा नहीं होता, जरा भी इस अविनाशी ज्ञान का विनाश नहीं होता। करके इतना पुरुषार्थ न कर दैवी रॉयल घराने में न भी आवे परन्तु अगर कम पुरुषार्थ किया तो भी उस सतयुगी दैवी प्रजा में आ सकते हैं। परन्तु पुरुषार्थ करना अवश्य है क्योंकि पुरुषार्थ से ही प्रालब्ध बनेगी, बलिहारी पुरुषार्थ की ही गाई हुई है।

"यह ईश्वरीय नॉलेज सर्व मनुष्य आत्माओं के लिये है"

पहले-पहले तो अपने को एक मुख्य प्वाइन्ट ख्याल में अवश्य रखनी है, जब इस मनुष्य सृष्टि झाड़ का

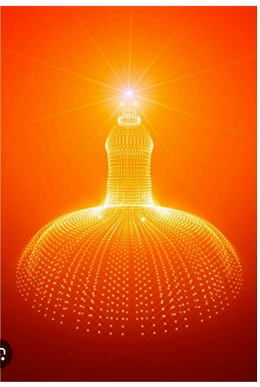

Most imp

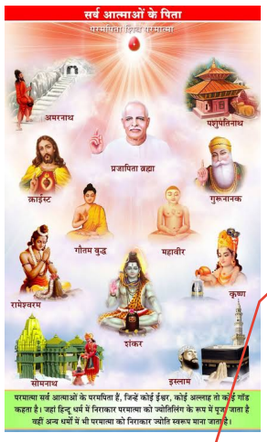

बीज रूप परमात्मा है तो उस परमात्मा द्वारा जो नॉलेज प्राप्त हो रही है वो सब मनुष्यों के लिये जरूरी है। सभी धर्म वालों को यह नॉलेज लेने का अधिकार है। भल हरेक धर्म की नॉलेज अपनी-अपनी है, हरेक का शास्त्र अपना-अपना है, हरेक की मत अपनी-अपनी है, हरेक का संस्कार अपना-अपना है लेकिन यह नॉलेज सबके लिये हैं। भल वो इस ज्ञान को न भी उठा सके, हमारे घराने में भी न आवे परन्तु सबका पिता होने कारण उनसे योग लगाने से फिर भी पवित्र अवश्य बनेंगे। इस पवित्रता के कारण अपने ही सेक्शन में पद अवश्य पायेंगे क्योंकि योग को तो सभी मनुष्य मानते हैं, बहुत मनुष्य ऐसे कहते हैं हमें भी मुक्ति चाहिए, मगर सजाओं से छूट मुक्त होने की शक्ति भी इस योग द्वारा मिल सकती है। ओम् शान्ति।

Point to be Noted

अव्यक्त इशारे -

अब लगन की अग्नि को प्रज्वलित कर योग को ज्वाला रूप बनाओ

आप बच्चों के पास पवित्रता की जो महान शक्ति है, यह श्रेष्ठ शक्ति ही अग्नि का काम करती है जो सेकण्ड में विश्व के किचड़े को भस्म कर सकती है।

जब आत्मा पवित्रता की सम्पूर्ण स्थिति में स्थित होती है तो उस स्थिति के श्रेष्ठ संकल्प से लगन की अग्नि प्रज्वलित होती है और किचड़ा भस्म हो जाता है, वास्तव में यही योग ज्वाला है। समझा?

अभी आप बच्चे अपनी इस श्रेष्ठ शक्ति को कार्य में लगाओ।

अब अपने आप से पूछो कि मैं कौन-सा परवाना हूँ? अनेक प्रकार की स्मृतियों के चक्कर समाप्त हुए हैं या अब तक भी कोई न कोई चक्कर अपनी तरफ खींच लेते हैं? अगर कोई भी व्यर्थ स्मृति के चक्कर अब तक लगाते हो तो स्वदर्शन चक्रधारी, संगमयुगी ब्राह्मणों का टाइटल प्राप्त नहीं हो सकेगा। जो स्वदर्शन चक्रधारी नहीं, वह भविष्य का चक्रवर्ती राजा भी नहीं होगा। 63 जन्म भक्ति मार्ग के अनेक प्रकार के व्यर्थ चक्कर लगाने में गंवाया। वही संस्कार अब संगम पर भी न चाहते हुए भी क्यों इमर्ज कर लेते हो? चक्कर लगाने में प्राप्ति का अनुभव होता है या निराशा होती है? 63 जन्म चक्कर लगाते, सब कुछ गंवाते,

स्वयं को और बाप को भूलते हुए अब तक भी थके नहीं हो कि ठिकाना मिलते भी चक्कर काटते हो? अविनाशी प्राप्ति होते, विनाशी अल्पकाल की प्राप्ति अब भी आकर्षित करती है? अब तक कोई अन्य ठिकाना प्राप्ति कराने वाला नजर आता है क्या? या श्रेष्ठ ठिकाना जानते हुए भी अल्पकाल के ठिकाने आइवेल अर्थात ऐसे समय के लिए बना कर रखे हैं? ऐसे भी बहुत चतुर हैं। लेने समय सब लेने में होशियार हैं, लेकिन छोड़ने के समय बाप से चतुराई करते हैं। क्या चतुराई करते हैं? छोड़ने के समय भोले बन जाते हैं। 'पुरुषार्थी हैं, समय पर छूट जावेगा, सरकमस्टाँसिज ऐसे हैं, हिसाब-किताब कड़ा है, चाहता हूँ लेकिन क्या करूँ?, धीरे-धीरे हो ही जायेगा' - ऐसे भोले बन बातें बनाते हैं। नॉलेजफुल बाप को भी नॉलेज देने लग जाते हैं। कर्मो की गति को जानने वाले को अपनी कर्म कहानियाँ सुना देते हैं। और लेते समय चतुर बन जाते हैं। चतुराई में क्या बोलते हैं - 'आप तो रहमदिल हो, वरदाता हो। मैं भी अधिकारी हूँ तो पूरा अधिकार मुझे मिलना चाहिए'। लेने में पूरा लेना है और छोड़ने में कुछ न कुछ छुपाना है अर्थात् कुछ न कुछ अपने पुराने संस्कार, स्वभाव व सम्बन्ध वह भी साथ-साथ रखते रहना है। तो चतुर हो गये ना। लेंगे पूरा लेकिन देंगे यथा शक्ति। ऐसे चतुराई करने वाले कौन-सी प्रालब्ध को पायेंगे। ऐसे चतुर बच्चों के साथ ड्रामा अनुसार कौन-सी चतुराई होती है?

Double Standard

स्वर्ग के अधिकारी तो सब बन जाते हैं, लेकिन राजधानी में नम्बरवार तो होते ही हैं ना। स्वर्ग का वर्सा बाप सबको देता है, लेकिन सीट हरेक की अपनी नम्बर की है। तो ड्रामा अनुसार जैसा पुरुषार्थ, वैसा पद Automatic स्वतः प्राप्त हो जाता है। बाप नम्बर नहीं बनाते, किसी को चन्द्रवंशी की अलग पढ़ाई नहीं पढ़ाते किसी को महारथी, किसी को घोड़ेसवार की छाप नहीं लगाते, लेकिन ड्रामा के अनुसार जैसा और जितना जो करता है वैसा ही पद प्राप्त कर जाता है। इसलिए जैसा लेने में चतुर बनते हो वैसे देने में भी चतुर बनो, भोला न बनो! चेक करो कि एक यथार्थ ठिकाने की बजाय और कोई अल्पकाल के ठिकाने अब तक रह तो

ये पक्का समझ लो..

बाबा हम सब को एक ही समय एक जैसा ही ज्ञान देते/रास्ता बताते है।
ये हम बच्चों पर निर्भर करता है की कौन उसको कितना अपनाता/उस रास्ते पर चलता है।
और उसी अनुसार उसका पद बनता है। इसीलिए कोई पीछे आते भी आगे जा सकते है।
ये मायने नहीं रखता की आप कहा रहते है वा कितने सालों से ज्ञान में है।

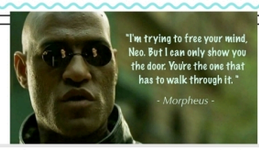

नहीं गये हैं, जहाँ न चाहते हुए भी बुद्धि चली जाती है? बुद्धि के कहीं जाने का अर्थ है कि ठिकाना है। तो सब हद के ठिकाने चेक करके अब समाप्त करो। नहीं तो यही ठिकाने सदाकाल के श्रेष्ठ ठिकाने से दूर कर देंगे। बाप श्रीमत स्पष्ट देते हैं कि ऐसे करो लेकिन बच्चे 'ऐसे को कैसे' में बदल लेते हैं, 'कैसे' को समाप्त कर, जैसे बाप चला रहे हैं, ऐसे चलो।

14/9/25

(01.02.1976)

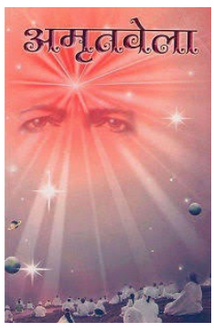

5.6 प्यार में लवलीन हो जाओ :

(अ) अमृतवेले महारथी बच्चे और सब बच्चे जब रूह-रूहान करते हैं, तो महारथियों की रूह-रूहान और मिलन मुलाकात और अनेक आत्माओं के मिलन और रूह-रूहान में क्या अन्तर होता है? यह जो गायन है कि 'आत्मा परमात्मा में लीन हो जाती है' — यह कहावत किस रूप में रांग है? क्योंकि एक शब्द बीच से निकाल दिया है। सिर्फ लीन शब्द नहीं है, लेकिन लवलीन। एक शब्द है लीन, एक है लव में लीन। जो कोई अति स्नेह से मिलते हैं, तो उस समय स्नेह के मिलन के शब्द क्या निकलते हैं? यह तो जैसे कि एक-दूसरे में समा गये हैं या दोनों मिल कर एक हो गये हैं, ऐसे-ऐसे स्नेह के शब्दों को उन्होंने इस रूप से ले लिया है। **यह जो गायन है कि वे एक-दूसरे में समा कर एक हो गये हैं — यह है महारथियों का मिलन।** बाप में समा गये अर्थात् बाप का स्वरूप हो गये। ऐसा पॉवरफुल अनुभव महारथियों को होगा।

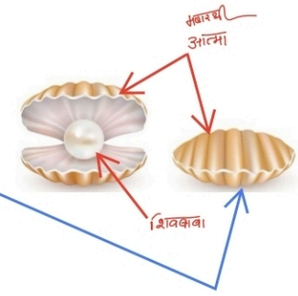

बाकि और जो बच्चे हैं वह स्नेह-शक्ति खींचने की कोशिश करते हैं। युद्ध करते-करते समय समाप्त कर देंगे, लेकिन महारथी बैठे और समाये। उनका लव इतना पॉवरफुल है, जो बाप को स्वयं में समा देते हैं। बाप और बच्चा समान स्वरूप की स्टेज पर होंगे। जैसे बाप निराकार, वैसे बच्चा। जैसे बाप के गुण, वैसे महारथी बच्चों के भी समान गुण होंगे। मास्टर हो गये ना! तो महारथी बच्चों का मिलन अर्थात् लवलीन होना। बाप में समा जाना अर्थात् समान स्वरूप का अनुभव करना। उस समय बाप और महारथी बच्चों के स्वरूप और गुणों में अन्तर नहीं अनुभव करेंगे। साकार होते हुए भी निराकार स्वरूप के लव में खोये रहते हैं, तो स्वरूप भी समान हो गया ना! अर्थात् अपना निराकारी स्वरूप प्रैक्टिकल स्मृति में रहता है। जब स्वरूप बाप समान है, तो गुण भी बाप समान। इसलिए महारथियों का मिलना अर्थात् बाप में समा जाना। **जैसे नदी सागर में समा कर सागर स्वरूप हो**

Example

15/09/25

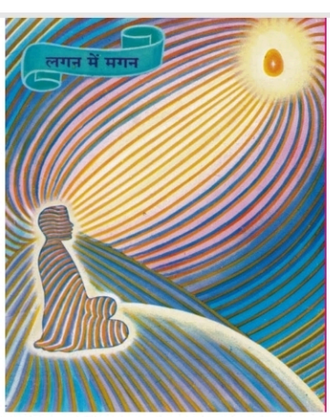

जाती है अर्थात् बाप के गुण स्वयं में अनुभव होते हैं। जो ब्रह्मा का अनुभव साकार में था, वह महारथियों का भी होगा। ऐसा अनुभव होता है? यह है **सागर में समा जाना अर्थात् स्वयं को सम्पूर्ण स्टेज का अनुभव करना।** यह अनुभव अब ज़्यादा होना चाहिए।

Call of time/समय की पुकार